क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ—दोनों को भलीभाँति जानते हैं। इसी से उन्हें सब क्षेत्रों का ज्ञाता कहा है। क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ और परम-क्षेत्रज्ञ में भेद को निम्नलिखित प्रकार से हृदयंगम किया जा सकता है। देह, जीवात्मा और परमात्मा के स्वरूप की पूर्ण जानकारी की वैदिक शास्त्रों में 'ज्ञान' संज्ञा है। यह श्रीकृष्ण का भी मत है। जीवात्मा और परमात्मा के भेदाभेद को जान लेना ही ज्ञान है। जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ को तत्त्व से नहीं जानता, वह पूर्ण ज्ञानी नहीं हो सकता। इसके लिए प्रकृति, पुरुष तथा प्रकृति और जीवात्मा के नियंता, ईश्वर के तत्त्व को जानना होगा। इन तीनों तत्त्वों में भ्रम नहीं होना चाहिए। स्मरण रहे कि चित्रकार, चित्र और चित्राधार अलग-अलग हुआ करते हैं। यह प्राकृत-जगत् अर्थात् क्षेत्र प्रकृति है, जीव इस प्रकृति को भोगने वाला पुरुष है तथा इन दोनों के नियन्ता परम ईश्वर श्रीभगवान् हैं। वेदों में कहा है, **भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममेतत्।** ब्रह्मतत्त्व की तीन धारणायें हैं। प्रकृति भोग्य-ब्रह्म है, प्रकृति को भोगने वाला जीव भोक्ता-ब्रह्म है और इन दोनों का नियामक भी ब्रह्म है, पर वही वास्तव में ईश्वर है।

इस अध्याय में यह भी स्थापित किया गया है कि दोनों क्षेत्रज्ञों (ज्ञाताओं) में से एक क्षर है और दूसरा अक्षर है। एक स्वामी है तो दूसरा उसके परतन्त्र है। जो यह मानता है कि दोनों क्षेत्रज्ञ एक हैं, वह श्रीभगवान् के इस स्पष्ट कथन का खण्डन करता है कि 'मैं भी क्षेत्रज्ञ हूँ।' रज्जु को सर्प मान लेने वाला ज्ञानी नहीं कहा जा सकता। क्षेत्र (देह) अनेक प्रकार के होते हैं और क्षेत्रज्ञ (देही) भी एक से अधिक हैं। भिन्न-भिन्न जीवों में माया पर प्रभुत्व करने की योग्यता अलग-अलग मात्रा में होती है। अतः विविध योनियों का सृजन हुआ है। किन्तु जीव के साथ श्रीभगवान् भी ईश्वर-रूप से इन सब में हैं। **च** शब्द महत्त्वपूर्ण है। भाव यह है कि ईश्वरक्षेत्रज्ञ सब देहों में है। आचार्य श्रील बलदेव विद्याभूषण का कथन है कि जीवात्मा के अतिरिक्त श्रीकृष्ण स्वयं परमात्मा के रूप में प्रत्येक देह में हैं। श्रीकृष्ण ने यहाँ स्पष्ट कर दिया है कि परमात्मा—क्षेत्र और जीव-क्षेत्रज्ञ, दोनों का ईश्वर है।

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत्।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु।।४।।

तत्=वह; **क्षेत्रम्**=क्षेत्र; **यत्**=जो है; **च**=और; **यादृक्**=जैसा है; **च**=तथा; **यत्**=जिन; **विकारि**=विकारों वाला है; **यतः**=जिससे; **च**=और; **यत्**=जो हुआ है; **सः**=वह (क्षेत्रज्ञ); **च**=भी; **यः**=जो है; **यत् प्रभावः च**=और जिस प्रभाव वाला है; **तत्**=वह; **समासेन**=संक्षेप से; **मे**=मुझ से; **शृणु**=सुन।

अनुवाद

वह क्षेत्र जो है, जिस स्वरूप वाला है और जिन विकारों वाला है और जिस कारण से हुआ है एवं क्षेत्रज्ञ भी जिस स्वरूप और प्रभाव वाला है, वह सब मुझ से संक्षेप में सुन।।४।।